17 दिसम्बर 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य :2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:30 से 7:00 तक
Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक प्रवचनसार पर

वर्ष : 45, अंक : 18
दिसम्बर (द्वितीय), 2022 (वीर नि. संवत्-2549)
संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल
आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दुबई में अभूतपूर्व धर्म प्रभावना

दुबई : यहाँ दिनांक 27 नवम्बर से 05 दिसम्बर 2022 तक DSO स्थित आदिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में प्रतिदिन प्रात: समयसार के आधार से एवं रात्रि में विविध स्थानों पर रत्नकरण्डश्रावकाचार के आधार से डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के विशेष प्रवचनों का लाभ मिला। एक दिन अजमान स्थित दिगम्बर जैन चैत्यालय एवं एक दिन आबूधाबी में डॉ. गोधा के व्याख्यानों का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि इस अवसर पर सत्पथ फॉउण्डेशन के तत्त्वावधान में 2 से 4 दिसम्बर तक विशेषरूप से शिविर का आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर रोजाना डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के दो-दो प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित नितेशजी शास्त्री के एक प्रवचन का लाभ मिला। साथ ही बालकक्षाओं एवं ध्यान के विशेष सेमिनारों का आयोजन भी किया गया।

समस्त कार्यक्रम श्री पद्मकुमारजी पाटनी व श्री आलोकजी जैन अजमान के निर्देशन में श्री अभिषेकजी टक्कामोरे, श्री पुनीतजी वैद, श्री शुद्धात्मजी भण्डारी, श्री अमितजी पाटनी, श्री अमितजी जैन, श्री अंकितजी समैया, श्री आतिशजी ठोलिया, श्री स्वीटूजी शाह, श्री विरलजी शाह, श्री नमनजी सरैया, श्रीमती स्मिताजी मेहता के सहयोग से सम्पन्न हुए। आवास व्यवस्था श्री दिनकरभाई जैन ने की।

आइए...नव वर्ष पर कुछ नया करते हैं... कुछ नया पढ़ते हैं
तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के जीवन की
चिर-प्रतिक्षित कृति
अधूरी उल्टी आत्मकथा

- ध्यान का वास्तविक स्वरूप
- आदर्श जीवन की रीति-नीति
- महाविद्यालय की शुरुआत
- अध्यात्म जगत की महत्त्वपूर्ण क्रान्तियाँ
- जीवन के संघर्षों की कहानी

वीतराग-विज्ञान पत्रिका के माध्यम से सम्पादकीय के रूप में जनवरी 2023 से आपके समक्ष प्रस्तुत होने जा रही है।
वीतराग-विज्ञान प्राप्त करें - 7412078704

सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी का सम्मान समारोह

इन्दौर : यहाँ सदी के ऐतिहासिक ढाईद्वीप जिनायतन के पंचकल्याणक में सौधर्म इन्द्र व शची इन्द्राणी बनने वाले सौभाग्यशाली पात्र श्री कमलजी-उषाजी पाड़लिया के सम्मान हेतु 11 दिसम्बर 2022 को एक विशिष्ट समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर श्री ढाईद्वीप मण्डल विधान सम्पन्न हुआ। विधान बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री के निर्देशन एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के समागम में पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर ने कराया।

इस समारोह में श्री राजकुमारजी पाटोदी, श्री सुदर्शनजी गुप्ता, श्री हंसमुखजी गांधी, श्री अशोकजी बड़जात्या, श्री पदमकुमारजी पहाड़िया, श्री प्रदीपजी बड़जात्या, श्री इन्द्रकुमारजी सेठी, श्री मनमोहनजी झांझरी, श्रीमती पुष्पाजी कासलीवाल, श्रीमती निर्मलाजी जैन, श्रीमती सरलाजी सामरिया आदि मौजूद थे।

यह समारोह इंदौर की प्रमुख संस्थाओं द्वारा किया गया, जिसमें दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, दिगम्बर जैन समाज सामाजिक संसद कीर्तिस्तम्भ, दिगम्बर जैन आम समाज संगठन, अध्यात्म संजीवनी ग्रुप, दिगम्बर जैन समाज साधनानगर, आयुष निर्माता संघ, मोदीजी की नसिया मंदिर, स्वस्तिधाम जहाजपुर निर्माण ट्रस्ट, दिगम्बर जैन महासमिति, श्वेताम्बर फेडरेशन ग्रुप्स ट्रस्ट, दिगम्बर जैन समाज नेमिनगर, रामचन्द्र नगर, रामाशाह, बघेरवाल, हुम्मड़, संयोगितागंज आदि सम्मिलित थे।

आठवें अध्याय का सार (उपदेश का स्वरूप)

चरणानुयोग के व्याख्यान का विधान...

चरणानुयोग में जीवों को बुद्धिगोचर हो सके वैसे धर्म का उपदेश देते हैं। यहाँ कहीं-कहीं कषायी जीवों को कषाय कराकर भी धर्म में लगाते हैं। दुनिया में बहुत तीव्र कषायी जीव हैं, उन्हें नरक के दु:खों का भय दिखाके तथा स्वर्ग के भोगों का लोभ दिखाकर स्वाध्यायादि धर्म कार्यों में लगाते हैं - यहाँ भय व लोभ दोनों ही कषाय है; लेकिन कषाय कराकर भी धर्म में ही लगाते हैं। जैसे कोई दुकान जाने के कारण स्वाध्याय में नहीं आता था। उससे कहते हैं कि स्वाध्याय में आने से पुण्य बंधता है और पुण्य से धंधा बढ़ता है। इसप्रकार दुकान का लोभ देकर भी स्वाध्यायादि के लिए प्रेरित करते हैं। तत्त्वार्थसूत्र के पाठ से उपवास का फल लगता है, तीर्थक्षेत्र की वन्दना करने से पुत्र, आदि की प्राप्ति हो जाती है - यह सब इसी पद्धति के कथन हैं।

यहाँ कोई कहे कि एक कषाय छोड़कर दूसरी कषाय कराना तो योग्य नहीं है, इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हुआ? उससे कहते हैं कि वास्तव में तो दोनों ही कषाय बुरी हैं - विषयों के प्रति होने वाली भी और धर्म के प्रति होने वाली भी; लेकिन वह कषाय तीव्र थी और ये कषाय मन्द है। जैसे शीतांग और ज्वर दोनों ही रोग है; लेकिन किसी का शीतांग से मरण होने वाला हो तो उसे ज्वर होने का उपाय कराते हैं और फिर ज्वर को भी मिटाते हैं। उसीप्रकार तीव्र कषाय छोड़ने के अर्थ मन्द कषाय कराते हैं और फिर मन्द कषाय भी छुड़ाते हैं।

चरणानुयोग में कितने ही उदाहरण काल्पनिक भी होते हैं। यहाँ कोई कहे कि उसमें झूठ बोलने का पाप तो लगेगा ही? उससे कहते हैं कि झूठ तो तब हो जब प्रयोजन झूठा हो; झूठ हो लेकिन प्रयोजन सच्चा हो तो झूठ नहीं कहते और सच हो लेकिन प्रयोजन झूठा हो तो झूठ ही है। आलंकारिक भाषा में कश्मीर को भारत का स्वर्ग कहा जाता है, यह झूठ होने पर भी झूठ नहीं है।

चरणानुयोग में स्थूलदृष्टि से कथन होते हैं। जैसे अणुव्रती को त्रस हिंसा का त्यागी कहा और मुनिराजों को स्थावर हिंसा का; लेकिन सर्वथा त्याग तो होता नहीं है।

चरणानुयोग में लोकप्रवृत्ति के अनुसार भी कथन होते है। दान का पात्र सम्यग्दृष्टि को कहा है; चूँकि दान की क्रिया चरणानुयोग में है। इसलिए सम्यक्त्व का निर्णय भी चरणानुयोग के अनुसार ही करना।

इसप्रकार चरणानुयोग के व्याख्यान विधान का वर्णन किया।

द्रव्यानुयोग के व्याख्यान का विधान...

द्रव्यानुयोग में छह द्रव्यों व सात तत्त्वों का यथार्थ श्रद्धान कराने के लिए युक्ति, हेतु, दृष्टान्तादि का निरूपण करते हैं। वस्तु तो अभेद है; परन्तु द्रव्यानुयोग उसमें भेद कल्पना से द्रव्य-गुण-पर्यायरूप भेद करके समझाता है। द्रव्यानुयोग में एकमात्र निश्चयनय का ही उपदेश देते है और कहीं-कहीं तो व्यवहार धर्म का निषेध भी करते हैं। व्रत-शील-संयमादि को हीन दिखाकर आत्मा के अनुभव करने का उपदेश देते हैं; क्योंकि यहाँ प्रयोजन शुद्धोपयोग में लगाने का है, इसलिए शुभभाव को हीन दिखाते हैं; लेकिन कोई शुभभाव को छोड़कर शुद्ध की जगह अशुभ में लगे तो वह योग्य नहीं है।

यहाँ कोई कहे कि अध्यात्म शास्त्रों में तो पुण्य-पाप को समान कहा है यदि शुद्धोपयोग न हो तो पुण्य में लगें या पाप में क्या फर्क पड़ता है? पण्डितजी उससे कहते हैं कि जैसे शूद्र जाति की अपेक्षा चाण्डाल और जाट सामान कहे हैं; लेकिन जाट चाण्डाल से तो उत्तम ही हैं। वैसे ही पुण्य और पाप की एक जाति कही है; लेकिन पुण्य पाप से तो उत्तम ही है; क्योंकि पाप तीव्र कषाय है और पुण्य मंद कषाय है।

अत: जहाँ भी व्यवहार धर्म का निषेध हो, उसे जानकर प्रमादी नहीं होना; क्योंकि जो जीव व्यवहार धर्म में ही मग्न हैं, उन्हें निश्चय धर्म की रुचि कराने के लिए व्यवहार को हीन दिखाते हैं।

द्रव्यानुयोग के शास्त्रों में सम्यग्दृष्टि के भोगों को निर्जरा का कारण कहा - ऐसा जानकर भोगों में नहीं लगना, भोगों को उपादेय नहीं मानना। यह तो सम्यक्त्व की महिमा दिखलाने वाला कथन है।

कहीं-कहीं ग्रहण त्याग का भी उपदेश देते हैं; परन्तु यहाँ परिणामों की अपेक्षा से कथन होता है। चरणानुयोग की तरह बाह्यक्रियाओं की मुख्यता से नहीं।

करणानुयोग में तो रागादि रहित शुद्धोपयोग यथाख्यात् चारित्र होने पर ही होता है अर्थात् 11वें गुणस्थान में होता है; जबकि द्रव्यानुयोग के अनुसार छद्मस्थ जिस काल में बुद्धि गोचर भक्ति आदि एवं हिंसा आदि कार्यरूप परिणामों को छोड़कर आत्मा के अनुभव में लगे उस काल में उसे शुद्धोपयोगी कहते हैं। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि गृहस्थदशा में शुद्धोपयोग हो सकता है; क्योंकि बुद्धि पूर्वक भक्ति और हिंसा आदि के कार्य तो गृहस्थों के जीवन में ही दिखाई देते हैं।

यह तो मात्र अनुयोगों की विवक्षाएँ हैं। द्रव्यानुयोग के अनुसार गृहस्थ को भी शुद्धोपयोग होता है और करणानुयोग के अनुसार मुनिराजों को भी नहीं होता अर्थात् 11वें गुणस्थान में होता है; इसलिए अनुयोगों के व्याख्यान को समझना अत्यन्त आवश्यक है।

इसप्रकार द्रव्यानुयोग के व्याख्यान का विधान जानना।

अनुयोगों में दोष कल्पनाओं का निराकरण

प्रथमानुयोग में दोष-कल्पना का निराकरण...

कितने ही जीव ऐसा कहते हैं कि प्रथमानुयोग में तो कथा कहानियाँ होती हैं तथा श्रृंगारादि का वर्णन होता है, उससे रागादि बढ़ते हैं; इसलिए इनका अध्ययन नहीं करना। उनसे कहते हैं कि जैसे कोई धर्मसाधन के लिए चैत्यालय बनवाये और कोई पापी वहाँ पापकार्य करे तो बनवाने वाले का तो कोई दोष है नहीं। उसीप्रकार धर्म में लगाने के अर्थ लिखे गए शास्त्रों से कोई राग का पोषण करे तो इसमें शास्त्रों का तो कोई दोष है नहीं।

यहाँ कोई कहे कि वीतरागी मुनिराजों ने ऐसे शास्त्र लिखे ही क्यों? उससे कहते हैं कि सरागी जीवों का मन वैराग्य कथा में नहीं लगता। जैसे बालक को पतासे में कड़वी दवाई रखकर खिलाते हैं। वैसे ही यहाँ श्रृंगार-भोगादि के कथनों के माध्यम से धर्म में लगाते हैं।

फिर कहता है कि जिन शास्त्रों के अध्ययन से राग उत्पन्न हो, उनका अध्ययन क्यों करें? उससे कहते है कि धर्म का पोषण करने वाले जैन पुराणों को पढ़कर भी यदि तुझे राग उत्पन्न होता हो तो अन्य किस जगह विरागी होगा? अर्थात् अन्यत्र तो बहुत रागी होगा, इसलिए इनका अध्ययन करना योग्य है।

कोई कहता है कि अन्य जीवों की कहानियों से अपना क्या भला होगा? उससे कहते है कि जैसे कामी पुरुषों को कामी पुरुषों की कथा सुनकर आनन्द आता है। वैसे ही धर्मात्माओं को धर्मात्माओं की, ज्ञानियों को ज्ञानियों की कथा/चर्चा आदि में आनन्द आता है - ऐसा विचारकर प्रथमानुयोग का अध्ययन करना।

करणानुयोग में दोष-कल्पना का निराकरण...

कितने ही जीव ऐसा कहते है कि करणानुयोग में तो गुणस्थान मार्गणास्थान, तीन लोक आदि का वर्णन होता है, उसे जानने से क्या लाभ? दया, दान, भक्ति या आत्मा का अनुभव करें तो भला हो। उनसे कहते हैं कि यहाँ उपयोग विशेषरूप से रमता है। पूजन-प्रवचन आदि कितने समय तक किया जा सकता है। भक्ति करने से कषाय मन्द होती है, उससे उत्तम फल मिलता है। सो करणानुयोग का अभ्यास करने से कषाय बहुत मन्द होती है, उससे अति उत्तम फल मिलता है।

फिर वह कहता है कि द्वीप-समुद्रादि का वर्णन किया वह तो व्यर्थ ही है। उससे कहते है कि इनमें भी इष्ट-अनिष्ट की बुद्धि नहीं होती, इसलिए राग-द्वेष घटते ही हैं।

कुछ जीव कहते हैं कि इसके अभ्यास में कठिनता बहुत है। उनसे कहते है कि अपनी बुद्धि अनुसार जितना जान सके उतना जानना। प्रमादी होने में तो धर्म है नहीं। प्रमाद में पड़े रहने से तो पाप ही होगा - ऐसा विचारकर करणानुयोग के अध्ययन का उद्यम करना।

चरणानुयोग में दोष-कल्पना का निराकरण...

कितने ही जीव ऐसा कहते है कि चरणानुयोग में तो व्रतादि क्रियाकाण्ड का वर्णन होता है, इनसे तो कुछ सिद्धि होती नहीं। फल तो अपने परिणामों का लगता है इसलिए उन्हें सुधारने का प्रयत्न करना चाहिए। उनसे कहते हैं कि भाई आत्मपरिणामों और बाह्यप्रवृत्तियों में निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध होता है। छद्मस्थ जीवों के सभी बाह्यक्रियाएँ परिणाम पूर्वक ही होती हैं। क्रिया तो खोटी हो और कहे कि परिणाम अच्छे है, सो भ्रम ही है।

यदि बाह्यसंयम से कुछ सिद्धि न हो तो सर्वार्थसिद्धि के देव तो बहुत ज्ञानी हैं, उनको तो चौथा गुणस्थान होता है और गृहस्थ श्रावक के पंचम गुणस्थान होता है। तीर्थंकरादि जीव भी बाह्यसंयम के बिना मुक्ति की प्राप्ति नहीं कर सकते। इसलिए यह नियम जानना कि **बाह्य संयम के बिना परिणाम निर्मल नहीं हो सकते** - ऐसा विचारकर चरणानुयोग का अध्ययन करना।

द्रव्यानुयोग में दोष-कल्पना का निराकरण...

कितने ही जीव ऐसा कहते है कि द्रव्यानुयोग पढ़ने से स्वच्छन्दी हो जाते हैं, भ्रष्ट हो जाते हैं। द्रव्यानुयोग का अध्ययन करने वाले व्रतादि अंगीकार नहीं करते। उनसे पण्डितजी कहते हैं कि जैसे गधा मिश्री खाकर मर जाये तो मनुष्य तो मिश्री खाना नहीं छोड़ेंगे। उसीप्रकार कोई पापी जीव अध्यात्मग्रन्थों को सुनकर स्वच्छन्दी हो तो विवेकी जन तो अभ्यास नहीं छोड़ेंगे।

वह कहता है कि हम निचलीदशा वालों को उत्कृष्ट उपदेश क्यों देते हो, हमें वह समझ नहीं आता। उसे फटकारते हुये पण्डितजी कहते है कि दुनियादारी के कार्यों में तो बहुत चतुराई दिखाता है और यहाँ मूर्खपना प्रकट करता है; सो तेरे अभिप्राय में ही खोट है। फिर कहता है कि इस निकृष्ट काल में ऐसा उत्कृष्ट धर्म उपदेश देना योग्य नहीं है। उससे कहते हैं कि काल उत्कृष्ट हो या निकृष्ट आत्मा के अनुभव करने में बाधक नहीं है, भले ही इस काल में मोक्ष न हो पर सम्यक्त्व तो हो ही सकता है।

कितने ही जीव ऐसा कहते हैं कि स्व-पर उपदेश तो ठीक परन्तु प्रमाण-नयादि व अन्यमतों का अभ्यास क्यों करना? उसमें तो व्यर्थ ही समय बर्बाद होता है। उनसे कहते है कि सामान्य जानने से विशेष जानना बलवान होता है। जैसे-जैसे विशेष जानना होता है वैसे-वैसे श्रद्धान दृढ़ होता है, रागादि घटने हैं - ऐसा विचारकर द्रव्यानुयोग के अभ्यास में प्रवर्त्तन करना योग्य ही है।

इसप्रकार चारों अनुयोगों में दोष निकालकर उनके अभ्यास का निषेध करना योग्य नहीं है - यह कहा। अब आगे अनुयोगों में दिखने वाले परस्पर विरोध का विशेष व्याख्यान करेंगे। **(क्रमशः)**

भ्रातृप्रेम का सौंदर्य भरत-बाहुबली

– संयम शास्त्री गुढ़ाचन्द्रजी

भरत का अन्तर्द्वन्द्व महाकाव्य को पढ़ने से ज्ञात होता है कि जिस प्रकार एक भंवरा फूल पर बैठकर अपने जीवन का सर्वस्व न्योछावर करके भी उसमें से रस निकालना चाहता है। उसीप्रकार डॉ. भारिल्ल का मन भी उस भ्रमर के समान है। वे अधिकांश समय से भरत चक्रवर्ती के हृदय कमल में भरे हुए भावों का रस निकालना चाहते थे।

भरत का अन्तर्द्वन्द्व में यह तनिक भी आभास नहीं होता कि जैसे यह भरत-बाहुबली की घटना आज से लाखों वर्ष पुरानी हो; उन्होंने अत्याधिक रोचकता और जीवंतता के साथ इसे लिखा है।

भरत का अन्तर्द्वन्द्व लिखकर डॉ. भारिल्ल ने समाज को एक नई दिशा दी है कि – **'लड़ना नहीं है सीखना, नहीं लड़ना सीखना है'**

यह दो भाइयों के प्रेम की कहानी है और प्रेम में तो जीत ही उसी की होती है जो हार गया हो, इसलिए अगर प्रेम में जीतना चाहते हो तो हार जाना। भरत अपने भाई बाहुबली से इतना प्रेम करते हैं कि वे स्वयं चक्रवर्ती होते हुए भी बाहुबली के सामने खुद की हार स्वीकार करते हैं; लेकिन बाहुबली को जीतता हुआ देखना चाहते हैं

अरे मैं देख नहीं सकता कभी भी उसे हारते हुए।
और वह कैसे देखेगा अरे रे मुझे हारते हुए।।

ऐसे प्रेम को तो प्रणाम करने का मन करता है; क्योंकि ऐसा प्रेम युगों-युगों में एकाध बार जन्म लेता है, अगर आज भी ऐसा ही प्रेम भाई-भाई में पनपने लगे तो फिर न कोई परिवार टूटेगा और समाज में भी एकता होगी तथा देश में फिर से सुखद मकरंद होगा।

इतिहास में जितने भी लड़ाई के, युद्ध के कथानक पढ़े हैं, उसके पीछे एक मात्र कारण है – **प्रेम का अभाव**

टूटा परिवार कौरवों का तो कैसा त्रास हो रहा था,
अपनों के हाथों अपनों का नाश हो रहा था।

मनुष्य का विरोधी हुए बिना उसका विरोध करना यह डॉ. भारिल्ल की अद्वितीय विशेषता रही है। वे विरोधी बने बिना विरोध करते हैं, उनका विरोध भी चलता रहता है और उस व्यक्ति से उनकी मित्रता भी चलती रहती है; क्योंकि उनका मानना यह है कि धर्म के लिए सत्य जितना जरूरी है; समाज और परिवार के लिए संगठन भी उतना ही आवश्यक है। वे मनुष्य का विरोध नहीं करते; बल्कि मनुष्य की मान्यताओं का विरोध करते हैं और भरत का अन्तर्द्वन्द्व भी उन्हीं मान्यताओं को सुधारने के लिए लिखा गया एक काव्य है।

डॉ. भारिल्ल ऐसा कहते हैं कि यह काव्य उनके बड़े भाई पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के लक्ष्य से लिखा गया है। वास्तव में जो प्रेम भरत और बाहुबली के जीवन में देखने-पढ़ने को मिलता है, वही प्रेम हमें दोनों भारिल्ल बंधु के जीवन में भी देखा है।

प्रेम का प्रतीक अक्सर ताजमहल को कहा जाता है; लेकिन यह कैसा प्रेम है कि जिसके निरूपण में निरपराध लोगों के हाथ काट दिए जाये। प्रेम तो भरत और बाहुबली ने किया था स्वयं छ:खण्ड के अधिपति होते हुए भी भरत अपने छोटे भाई बाहुबली से कहते हैं कि यह पूरा राजपाठ तुम रख लो मुझे इन सब में कोई रुचि नहीं है; परन्तु तुम मुझे अपने गले लगा लो, मैं तुम्हारे गले लगना चाहता हूँ।

यूं तो इतिहास में प्रेम को दर्शाते हुए अनेक कथानक मिलते हैं राधा-कृष्ण, हीर-रांझा; लेकिन भरत-बाहुबली जैसी कहानियाँ प्राय: मिलना बहुत मुश्किल है अत: हम सभी भरत और बाहुबली की कहानी से अधिक से अधिक प्रेरणा प्राप्त करें और अपने लौकिक जीवन को सुखद बनाये ●

देशभर में ढाईद्वीप रथ का प्रवर्तन

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के प्रचार हेतु भारतवर्ष में अलौकिक सौंदर्य युक्त ढाईद्वीप जिनायतन की रचना सदृश ढाईद्वीप रथ का प्रवर्तन किया जा रहा है।

गुजरात व मध्यप्रदेश के अन्तर्गत ढाईद्वीप रथ ने तलोद, चैतन्यधाम, नवरंगपुरा, मेघानी नगर, वस्त्रापुर, ओढ़व, मणिनगर, बोटाद, सुरेन्द्रनगर, लिमडी, सोनगढ़, भावनगर, गिरनार, राजकोट, जामनगर, मोरबी, बाकानेर, सूरत, शुजालपुर, भोपाल, विदिशा, बीना, बण्डा, दलपतपुर, नैनागिर, बक्सवाहा, दमोह, खड़ैरी, फुटेरा, शाहगढ़, घुवारा, द्रोणगिरि, टीकमगढ़, ललितपुर, आरोन, गुना, बदरवास, शिवपुरी, कोलारस, लुकवासा, खनियांधाना, सोनागिर, ग्वालियर, गोरमी, मौ, अमायन, भिण्ड आदि नगरों में भ्रमण कर साधर्मियों को सदी के ऐतिहासिक पंचकल्याणक के साक्षी बनने के लिए आमंत्रित किया। उक्त सभी स्थानों पर रथ का स्वागत किया गया। पूजन, प्रवचन एवं रथ में शास्त्र विराजमान कर नगर में रथ यात्रा निकाली गई।

फैडरेशन द्वारा मासिक पूजन सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की जयपुर महानगर शाखा द्वारा 04 दिसम्बर 2022 को प्रात: ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर स्थित पंचतीर्थ जिनालय में लघु पंच परमेष्ठी विधान सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन का प्रसारण किया गया। पूजन पण्डित समकितजी शास्त्री एवं पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न हुई। वात्सल्य-भोज श्री परमागम-श्रुतिजी जैन सुपुत्र अविशेष जैन की ओर से कराया गया। आयोजन फैडरेशन के अध्यक्ष पण्डित संजयजी सेठी, पण्डित राजेशजी शाहगढ़ एवं पण्डित संजयजी शास्त्री के निर्देशन में हुआ।

महाविद्यालय स्थल

सा विद्या या विमुक्तये

ज्ञान वैभव तजा

– समर्थ जैन, हरदा (शास्त्री तृतीय वर्ष)

(तर्ज : भूल कर अपना घर..)

ज्ञान वैभव तजा, कैसी भव की सज़ा, तब भी सुख राग का।।

नरकों में दाह तन में हर कण से दुःखी,
क्रोधी मानी दिखे सब, वहाँ को सुखी?
मार काटे जला, पकड़े पर का गला, बदला सुख खाक का
ज्ञान वैभव तजा...।।1।।

इंदर देव तो भोगे रे विषय अनेक,
फिर भी भोगे की चाहत, न कम कोई एक।
भोग कर भोग के, ज्ञेय आनंद लिए, मिथ्या सुख मानता
ज्ञान वैभव तजा...।।2।।

थावर त्रस की दशा में भटकते रहे,
भोजन बिन जो सहे दुःख, कहाँ तक कहें?
भार बोझा सहा, आतपहिम भी रहा, पर्यय सुख मोह का
ज्ञान वैभव तजा...।।3।।

नर तन पाया तो माया मद लोभ किया,
जोड़ा धन तो, नहीं निज का शोध किया।
इच्छा पूरी नहीं, आकुलता ही रही, माने सुख व्यर्थ का
ज्ञान वैभव तजा...।।4।।

दर दर घूमा भटकता, चउ गतियों में रे,
तब भी राग बसा नित सदा चित्त में।
ज्ञान जानें सदा, रागी तू न कदा, अनुभव कर ज्ञान का
ज्ञान वैभव तजा...।।1।।

महाविद्यालय का सुयश

जयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक 09 दिसम्बर 2022 को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा जयपुर के मशहूर जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट में जैनदर्शन मूल सिद्धान्तों पर केन्द्रित **आकर्षण : एक मीठा ज़हर** नामक नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया।

छोड़ो ये सब दिखलावा, इसमें न कोई लाभ।
तेरा सुख तुझमें ही है, तू जाग सके तो जाग।।

विशाल जनसमुदाय के समक्ष उत्कृष्ट प्रस्तुतीकरण कर इस दिखावे भरी दुनिया की चकाचौंध से दूर रहकर सहज रहने का सन्देश दिया।

महाविद्यालय की महत्त्वपूर्ण गतिविधियों के अन्तर्गत...

साप्ताहिक विचार गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की गतिविधियों के अन्तर्गत तात्त्विक विचार गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 26 नवम्बर 2022 को **जिनधर्म की नींव पाठमालायें** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित विक्रान्तजी पाटनी झालरापाटन ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सम्यक जैन दिल्ली व मोक्ष जैन पिड़ावा रहे। सत्र का संचालन सुबलश्री समाज शेडवाल व दिव्यांश जैन सागर ने एवं मंगलाचरण आदि जैन खनियांधाना ने किया।

इसी शृंखला में दिनांक 27 नवम्बर 2022 को **सप्त तत्त्व एक अनुशीलन** विषय पर जैन धर्म के परिप्रेक्ष्य में सात तत्त्वों व तत्सम्बन्धित भूलों को स्पष्ट करने वाली गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित भागचन्दजी शास्त्री जयपुर ने की। कुशाग्र जैन सागवाड़ा और जिनय जैन इन्दौर श्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में चुने गए। सत्र का संचालन सिद्धान्त उपाध्ये चैन्नई व दर्शन पाटील नान्दनी ने एवं मंगलाचरण अनमोल जैन राघौगढ़ ने किया।

इसी क्रम में दिनांक 04 दिसम्बर 2022 को **जैन दर्शन में कर्म व्यवस्था** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता विदुषी प्रतीतिजी शास्त्री नागपुर ने की। श्रेष्ठ वक्ताओं के रूप में असान जैन खनियांधाना एवं राहुल जैन अमायन चुने गए। सत्र का संचालन अमन जैन दमोह व आदित्य जैन फुटेरा एवं मंगलाचरण वंशित जैन कोटा ने किया।

इसी कड़ी में दिनांक 10 दिसम्बर 2022 को **जिनागम में ध्यान का स्वरूप** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर ने की। गोष्ठी में प्रथम स्थान सहज जैन छिन्दवाड़ा एवं द्वितीय स्थान अमन जैन खनियांधाना ने प्राप्त किया। सत्र का संचालन वैभव जैन सागर तथा विराग बैलोकर डासाला व मंगलाचरण कुशाग्र जैन ने किया।

दिनांक 11 दिसम्बर 2022 को आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता श्रीमती श्रुतिजी शास्त्री ने की। विशिष्ट अतिथि श्रीमती संगीताजी जैन रहीं। **मोक्षमार्ग प्रकाशक एक परिशीलन** विषय पर आधारित इस गोष्ठी के श्रेष्ठ वक्ता के रूप में शास्त्री तृतीय वर्ष से अविरल जैन खनियांधाना व शास्त्री प्रथम वर्ष से संयम जैन खैरागढ़ चने गए। सत्र का संचालन चेतन जैन गुढ़ाचन्द्रजी एवं मंगलाचरण जिनय जैन इन्दौर ने किया।

उक्त गोष्ठियों में आभार-प्रदर्शन महाविद्यालय के उप-प्रचार्य पं. जिनकुमारजी शास्त्री व अधीक्षक पं. अमनजी शास्त्री ने किया।

• महाकाव्य : भरत का अन्तर्द्वन्द्व •

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

गतांक से आगे...

तृतीय अध्याय

(दोहा)

किया भरत ने प्रथम ही, णमोकार का जाप।
फिर निज आतम ध्यान धर, मेटे सब सन्ताप।।1।।

ऋषभदेव जिनराज को, वन्दन बारम्बार।
फिर सब अपने काम में, लगा सभी दरबार।।2।।

(वीर)

सारा दरबार उपस्थित है सब अपने–अपने आसन पर।
और सभी के मध्य विराजे भरतराज सिंहासन पर।।
मंगलाचरण का पाठ सभी जन सबसे पहले करते हैं।
श्री ऋषभदेव के चरणों में वन्दन अभिनन्दन करते हैं।।

अन्दर से इकदम शान्त भरत सबको समझाने लगते हैं।
श्री ऋषभदेव के नन्त गुणों के गाने गाने लगते हैं।।
श्री ऋषभदेव के दिव्यज्ञान की गौरवगाथा गाते हैं।
वृषभेश्वर की वीतरागता का स्वरूप समझाते हैं।।

'ऐसा ना हो, अर ऐसा हो' – ऐसा कुछ भाव न उनको है।
जो कुछ जैसा हो रहा जहाँ वे सहज जानते रहते हैं।।
जिसको जैसा है भाव सहज वे उसे जानते हैं पूरण।
उसकी रग–रग को पहिचानें गहराई जानें संपूरण।।

सबके सभी परिणमन उनके सहज ज्ञान में हैं आते।
पर उनके दिव्यज्ञान को वे सब नहीं तरंगित कर पाते।।
कोई भी घटना दुर्घटना ना उनको आकुल करती है।
रे उनका ज्ञान जलोदधि तो नित शान्त निराकुल रहता है।।

घटना–दुर्घटना सब जानें पर शान्ति न खण्डित होती है।
यह वीतरागता की महिमा जो उनको मण्डित रखती है।।
सर्वज्ञ वीतरागी जिनवर वे नहीं किसी से जुड़ते हैं।
बस अपने में ही रहते हैं बस अपने में ही रहते हैं।।

वे भरतराज कुछ देर शान्त ऐसे ही कहते रहते हैं।
कुछ देर शान्त बैठे रहते फिर इकदम कहने लगते हैं।।
अब चलो सभी हम मिलजुलकर आयुधशाला में चलते हैं।
अर चक्ररत्न का यथायोग्य विधिपूर्वक स्वागत करते हैं।।

फिर भरतक्षेत्र के छह खण्डों के नृपगण को अपनाने की।
तैयारी करते हैं मिलकर दिग्विजय यात्रा करने की।।
मन्त्रीगण अर सेनापति मिल सब तैयारी में जुट जावें।
और बनावें कार्यक्रम फिर हमें सभी कुछ बतलावें।।

शुभ मुहूर्त्त में निकलें हम दिग्विजय यात्रा करने को।
सबसे पहले पूर्व दिशा की ओर हमें जाना होगा।।
श्री गंगातट पर बसे हुये राजाओं से मिलना होगा।
विजय यात्रा का मकसद उन सबको समझाना होगा।।

यह भरतक्षेत्र प्राकृतिकरूप से छह खण्डों में बँटा हुआ।
फिर खण्डों के भी खण्ड–खण्ड कर दिये अनेकों नृपगण ने।
सबको अखण्ड करना होगा इस भरतक्षेत्र की गरिमा को।
इस भरतक्षेत्र के गौरव को इस भरतक्षेत्र की महिमा को।।

खण्ड–खण्ड में बँटे हुये ये सब छोटे–छोटे नृपगण।
आपस में लड़ते रहते हैं बिन कारण ये छोटे नृपगण।।
इन झगड़ों से मतभेदों से खण्डित होता है यह भारत।
हो गये यदी हम सब अखण्ड तो मण्डित होगा यह भारत।।

अर विकास के काम नहीं हो पाते हैं इन खण्डों में।
गंगा जैसी बड़ी नदी बँट जाती कई भूखण्डों में।।
उसका बँटवारा करने को सब राज्य झगड़ते रहते हैं।
इन नदियों पर फिर बड़े–बड़े रे बाँध नहीं बन सकते हैं।।

इन बाँधों के बिना सिंचाई कैसे होगी खेतों की।
अरे सिंचाई बिना जुताई कैसे होगी खेतों की।।
फिर अनाज का उत्पादन भी कैसे होगा खेतों में।
फिर विकास के काम भला कैसे हो पावें भारत में।।

(क्रमशः)

प्रश्नोत्तरमाला

24

समयसार अनुशीलन के आधार से

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न : द्रव्येन्द्रियाँ किसे कहते हैं? उन्हें शरीर के परिणाम को प्राप्त क्यों कहा जाता है?

उत्तर : स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण - इन पाँचों को द्रव्येन्द्रियाँ कहते हैं। ये शरीर के अंग हैं; अत: इन्हें शरीर के परिणाम को प्राप्त कहा जाता है।

प्रश्न : भावेन्द्रियाँ किसे कहते हैं?

उत्तर : आत्मा के ज्ञान गुण की वह क्षयोपशमदशा, जो इन्द्रियों के माध्यम से जानने-देखने का काम करती है; उसे भावेन्द्रिय कहते हैं।

प्रश्न : इन्द्रियों के विषयभूत पदार्थ से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : क्षयोपशम रूप भावेन्द्रिय, द्रव्येन्द्रियों के माध्यम से जिन पदार्थों को जानती है, उन पदार्थों को यहाँ इन्द्रिय कहा गया है। जैसे- इन्द्रियों के माध्यम से दिखाई देने वाले देव-शास्त्र-गुरु, स्त्री-पुत्रादि, कार-मकानादि सभी पदार्थ। यहाँ यह कहा जा रहा है कि आँख तो आँख है ही, पर आँखों से दिखाई देने वाले पदार्थ भी आँख ही हैं; इसीप्रकार कान तो कान है ही, पर कान से सुनाई देने वाले शब्द भी कान ही हैं। इसीप्रकार स्पर्शन, रसना और घ्राण के सम्बन्ध में भी समझना चाहिए। इसप्रकार यहाँ इन्द्रियों से दिखाई देने वाले सभी पदार्थ **इन्द्रिय** शब्द में शामिल कर लिये गये हैं।

प्रश्न : द्रव्येन्द्रियों को जीतने से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : द्रव्येन्द्रियों को भेदाभ्यास की प्रवीणता से प्राप्त अन्तरंग में प्रगट अतिसूक्ष्म चैतन्य स्वभाव के अवलम्बन के बल से अपने से सर्वथा भिन्न जानना ही द्रव्येन्द्रियों को जीतना है।

प्रश्न : भावेन्द्रियों को जीतने से क्या तात्पर्य है।

उत्तर : भिन्न-भिन्न अपने विषयों के व्यापार से जो विषयों को खण्ड-खण्ड ग्रहण करती हैं, ज्ञान को खण्ड-खण्ड बतलाती हैं - ऐसी भावेन्द्रियों को प्रतीति में आती हुई अखण्ड एक चैतन्य शक्ति के द्वारा अपने से सर्वथा भिन्न जानना ही भावेन्द्रियों का जीतना है।

प्रश्न : इन्द्रियों की आधीनता से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : अज्ञानी जीव अनादि से इन्द्रियों (द्रव्येन्दिय, भावेन्द्रिय और उनके विषयभूत पदार्थ) को आत्मा जानता रहा है, इनमें ही अपनापन स्थापित करता रहा है, इन्हीं में जमा-रमा रहा है; यही जीव की इन्द्रियों की आधीनता है। **(क्रमश:)**

हार्दिक आभार

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट विगत अनेक दशकों से प्रतिवर्ष जैनतिथिदर्पण का प्रकाशन अनवरतरूप से करता रहा है। यह प्रतिवर्ष सबसे पहले प्रकाशित होने वाला तिथि दर्पण (कालेंडर) है। जो जैन समाज के सुप्रसिद्ध **ज्योतिषाचार्य प्रकाशजी दादा मैनपुरी** द्वारा तैयार किया जाता था। अब ये महान कार्य प्रकाशदादा के निर्देशन में **ज्योतिर्विद अनुजजी जैन** द्वारा किया जा रहा है।

जैनपथ प्रदर्शक एवं टोडरमल स्मारक ट्रस्ट परिवार आपके सेवाभाव की अनुमोदना करते हुए आभार ज्ञापित करता है।

वैराग्य समाचार

1) चन्देरी निवासी **श्रीमती कमलादेवी बंसल** का 05 दिसम्बर 2022 को पंचपरमेष्ठी के स्मरण पूर्वक देह-वियोग हो गया। ज्ञातव्य है कि आप डॉ. अखिलजी बंसल की माताश्री एवं श्रीमती गुणमालाजी ध.प. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की भाभी थीं।

2) बोरीवली-मुम्बई निवासी **श्रीमती पुष्पाबेन धीरजलाल शेठ** का 06 दिसम्बर 2022 को शान्त परिणाम पूर्वक देह-परिवर्तन हुआ। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित राजेशजी शेठ की माताश्री एवं स्नातक पण्डित जिनेशजी शास्त्री की दादीश्री थीं। आपकी स्मृति में 11000/- की राशि प्राप्त हुई; एतदर्थ धन्यवाद।

3) जयपुर निवासी **श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी** का दिनांक 06 दिसम्बर 2022 को शान्त परिणाम से देहावसान हो गया। आप नमिताजी छाबड़ा (मोतीसंस) के पिताश्री थे।

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें - www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें - www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

पोस्टर मँगा लें

मकर संक्रान्ति पर माँझे से होने वाले नुक़सान के प्रति जागरूक करने वाले पोस्टर सर्वोदय अहिंसा की ओर से नि:शुल्क भेजे जा रहे हैं। इच्छुक साधर्मी अपना पूरा पता **9509232733** पर भेजें। **- संजय शास्त्री**

ढाईद्वीप में पंचकल्याणक...

- परमात्मप्रकाश भारिल्ल (सह-सम्पादक)

ढाईद्वीप में पंचकल्याणक आदिनाथ भगवान का।
इन्दौर नगर में महामहोत्सव भगवन के गुणगान का।।

अवसर यह अद्भुत जीवन में आतम के कल्याण का,
वीर-कुन्द के शासन में उपकार कहान महान का।
अहो गुरुदेव अगर न आते समझाते जीवन में,
कलीकाल में कौन बताता मारग ये ध्रुवधाम का।।
ढाईद्वीप में पंचकल्याणक...।।1।।

भगवान बनेंगे चन्द दिनों में पत्थर जो यहाँ पर आए,
यह तो है दुर्भाग्य उन्हीं का जो आज यहाँ ना आये।
पामर के भगवन बनने का अवसर ये उत्थान का,
अमृतचन्द जिनसेन उमा का ये मार्ग कहान महान का।।
ढाईद्वीप में पंचकल्याणक...।।2।।

महाभाग्यशाली हैं वे जन जो आज यहाँ पर आए,
उनका भी उपकार क्या कम है जो यहाँ आपको जो लाये।
कृत कारित अनुमोदन पूर्वक मार्ग चुना कल्याण का,
यहाँ सभी का स्वागत है यह अवसर है सम्मान का।।
ढाईद्वीप में पंचकल्याणक...।।3।।

सहस्त्राधिक प्रस्तर प्रतिमाएँ बन जायेंगीं जिनबिम्ब,
अनन्तकाल तक कोटि-कोटिजन निरखेंगे प्रतिबिम्ब।
हममें उनमें क्या है अन्तर कितनी और समानता,
यही समझना लक्ष्य सभी का दर्शन के भगवान का।।
ढाईद्वीप में पंचकल्याणक...।।4।।

जो है समानता हममें उनमें वह मेरा निज रूप है,
अतिरिक्त और जो दिखता मुझमें वह तो बस विद्रूप है।
प्रज्ञा छैनी से विभाव त्यागना है साधक की साधना,
और उन्हीं के गुणों का चिन्तन हम सबकी आराधना।।
ढाईद्वीप में पंचकल्याणक...।।5।।

वह अतिरिक्त हटा पत्थर से प्रकटी जिन प्रतिमाएँ,
दर्शन करने बालों को जो नित मुक्तिमार्ग बताएँ।
स्वर्ग-सुखों का मोह त्यागकर पथ अपनाया निर्ग्रंथ का,
त्रिलोक पूज्य वे महान आत्मा जिनका लक्ष्य महान था।।
ढाईद्वीप में पंचकल्याणक...।।6।।

हमारी भूलों को बतलाया और सत्य का ज्ञान कराया,
सत्पथ पर चलना सिखलाया निज वैभव का ज्ञान कराया।
भटकों को मार्ग दिखलाना था उपकार कहान का,
अब सिद्धशिला पर कूच थमेगा इस पामर भगवान का।।
ढाईद्वीप में पंचकल्याणक...।।7।।

सर्वोदय अहिंसा जयपुर के तत्त्वावधान में
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के करकमलों से...

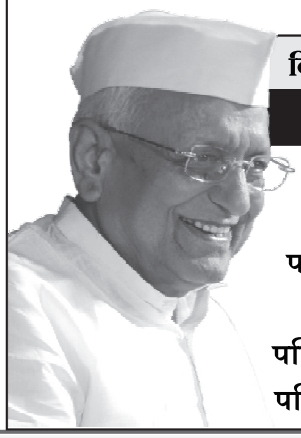

विशिष्ट विद्वानों का विशिष्ट सम्मान

दिनांक : शुक्रवार, 23 दिसम्बर 2022

सम्मानार्ह विद्वत्गण

डॉ. अरुणकुमारजी जैन, जयपुर
पण्डित सुनीलकुमारजी जैन, राजकोट
डॉ. मनीषजी शास्त्री, मेरठ
पण्डित विक्रान्तजी पाटनी, झालरापाटन
पण्डित संजीवजी जैन, उस्मानपुर-दिल्ली

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 दिसम्बर 2022

प्रति,